5

परमेश्वर के चुने हुए

''जैसा उस ने हमें जगत की उत्पत्ति से पहिले उस में चुन लिया, कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों। और अपनी इच्छा की सुमति के अनुसार हमें अपने लिए पहिले से ठहराया, कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र हों, कि उसके उस अनुग्रह की महिमा की स्तुति हो, जिसे उस ने हमें उस प्यारे में सेंत मेंत [अर्थात नि:शुल्क] दिया'' (1 इफिसियों 1:4-6)।

सबको अच्छा लगता है कि उसे स्मरण रखा जाए। शायद हम सब में पाई जाने वाली इस भावना के कारण ही हमारी बातचीत में कुछ वाक्य प्रसिद्ध हैं। किसी प्रियजन को जन्म दिन का कार्ड भेजते हुए हम उस पर लिखते हैं ''मैं तुम्हारे बारे में ही सोच रहा हूं।'' टेलीफोन पर बात करते हुए हम अपने घनिष्टतम मित्र से कहते हैं, ''मैं तुम्हें ही याद कर रहा था।'' छुट्टियों में या किसी और काम से बाहर जाने के लिए अपने घर के लोगों से बिछुड़ते समय हम कहते हैं, ''तुम मुझे बहुत याद आओगे।'' इन छोटी-छोटी बातों से पता चलता है कि किसी का हमारे लिए विशेष महत्व है और हम उसे भूले नहीं हैं या भूलेंगे नहीं। जब कोई हमें ऐसी बातें कहता या लिखता है, तो इन बातों से वह हमारे मन को छूकर हमें उत्साहित करता है।

मित्रों तथा सम्बन्धियों को यह कहते सुनना कि वे हमारे बारे में ही सोच रहे हैं या वे हमारे बारे में सोच रहे होंगे, हमें अच्छा लगता है तो फिर परमेश्वर को यह कहते हुए सुनना कि हम उसकी दृष्टि में विशेष हैं, हमें कितना अच्छा लगेगा! यदि आप मसीह में हैं, तो परमेश्वर ने आप से यही कहा है। इफिसियों 1:4-6 में पौलुस कहता है कि मसीही लोग परमेश्वर के चुने हुए हैं। मसीह में छुटकारा पाए हुए सब लोगों को पवित्र शास्त्र द्वारा आश्वस्त किया जाता है कि वे परमेश्वर के चुने हुए लोग हैं! क्या इससे आपका हौसला बुलन्द नहीं होगा?

इस वाक्य को लिखने के पौलुस के ढंग से हम जान सकते हैं कि आत्मा हमें परमेश्वर के चुने हुओं के रूप में बहुत ही विशेष अर्थात जो किसी भी सांसारिक सम्मान से बढ़कर हैं, देखना चाहता है। पौलुस एशिया माइनर में इफिसुस की कलीसिया के नाम पत्री लिख

रहा था। उसकी पत्री की विषय वस्तु को वाक्यांश ''कलीसिया, मसीह की देह'' में संक्षिप्त किया जा सकता है। पत्र के आरम्भ में पौलुस ने लिखा कि कलीसिया उन लोगों से बनती है जिन्हें परमेश्वर ने चुना है। वे परमेश्वर के चुने हुए अर्थात वे लोग हैं जिन्हें उसने अपनी स्वर्गीय आशिषें देने के लिए चुना है। इस प्रकार के चुनने को वह ''predestination'' अर्थात पहले से ठहराया हुआ या पहले से ही चुना हुआ कहता है (इफिसियों 1:5)।

परमेश्वर द्वारा हमें चुनने की इस बात से कई प्रश्न खड़े होते हैं, या नहीं? क्या पौलुस यह कह रहा था कि परमेश्वर एक मनुष्य को उद्धार और दूसरे को नाश के लिए चुनता है? यदि वह एक को स्वर्ग और दूसरे को नरक के लिए चुनता है, तो यूहन्ना 3:16 में यीशु के वचन के अनुसार, परमेश्वर संसार के हर व्यक्ति से विशेष प्रेम कैसे रखता है?

आइए इस पद पर सावधानीपूर्वक विचार करें और प्रिडेस्टिनेशन अर्थात पहले से ठहराए जाने के इस लुभावने विषय पर अपने प्रश्नों के लिए पौलुस को उत्तर देने दें। इफिसियों 1:4-6 में, हम देखेंगे कि परमेश्वर कैसे हर किसी से प्रेम करता है, कैसे उसने संसार की नींव रखने से पहले ही हमारे विषय में सोचा और कैसे उसने चुने हुओं को चुना।

उसमें चुने गए

पहली बात, पौलुस ने कहा कि परमेश्वर ने ''... हमें... *उस में* चुन लिया ...'' (इफिसियों 1:4)। परमेश्वर ने अपने पुत्र की देह में ही मनुष्य को अपना उद्धार प्रस्तुत करने और अपनी अन्य आत्मिक आशिषें देने के लिए चुना है। जो लोग उसकी इस देह में आ चुके हैं, वे परमेश्वर के चुने हुए हैं।

इफिसियों 1:3-14 के समस्त गुणानुवाद में, जिसे बाइबल का सबसे लम्बा वाक्य कहा जाता है 1:4-6 के व्यापक संदर्भ में, पौलुस उन विशेष आशिषों को एक-एक करके गिनता है जिन्हें परमेश्वर ने मसीह में रखा है। वह गोद लिए जाने को परमेश्वर की संतान (आयत 5), क्षमा (आयत 7), छुटकारे (आयत 7), ज्ञान और समझ (आयत 8), मसीह में एकत्र करने (आयत 10), मीरास (आयत 11) और पवित्र आत्मा की छाप (आयत 13) के रूप में है।

कालान्तर में, अनादिकाल से ही परमेश्वर ने यह निर्णय लिया था कि जो लोग मसीह में आएंगे और मसीह के अनुग्रह के दान को पाएंगे, वे विशेष रीति से चुने हुए लोग होंगे अर्थात वे उसकी आशिषों और उसके उद्धार के लिए चुने गए होंगे। उद्धार की यह योजना परमेश्वर द्वारा अनन्तकाल से पहले अर्थात समय से पहले ही ठहराई गई थी। उसने यह चयन मौज में या पक्षपात से नहीं किया था। उसने पहले से यह नहीं ठहराया कि एक को बचाएगा और दूसरे का नाश करेगा, बल्कि उसने पहले यह ठहराया कि वह केवल उनका ही उद्धार करेगा जो मसीह की आत्मिक देह अर्थात कलीसिया में प्रवेश करके उसके उद्धार को ग्रहण करेंगे।

अंग्रेज़ी भाषा के शब्द "predestine" का अर्थ है ''पहले से ठहराना,'' जबकि "fore-knowledge" (पूर्वज्ञान) का अर्थ है ''पहले से जानना।'' शायद परमेश्वर को यह पूर्वज्ञान

है कि किसका उद्धार होगा और किसका नाश, परन्तु वह पहले से यह नहीं ठहराता कि किसका उद्धार करना है और किसका नाश। उद्धार पाने या न पाने को हर व्यक्ति मसीह में आने का निर्णय लेकर स्वयं चुनता है।

ये दो विषय अर्थात पूर्व ज्ञान और पहले से ठहराए जाना, स्पष्टत: पूरी तरह से समझना हमारे लिए कठिन है। कुछ सीमा तक, हमें विश्वास से ही स्वीकार करना होगा कि बाइबल उनके विषय में क्या कहती है। नि:संदेह, बाइबल के कहने का अर्थ है कि परमेश्वर बिना ठहराए पहले से ही जान सकता है। परमेश्वर के पूर्व ज्ञान को हमारी स्मरण शक्ति के समान माना जाता है। हम याद रख सकते हैं कि कल क्या हुआ था, परन्तु कल हुई घटनाओं को याद रखने का अभिप्राय यह नहीं कि वे फिर हो जाएंगी। शायद परमेश्वर का पूर्व ज्ञान बीते समय की हमारी यादों में जाने के विपरीत समय में आगे चला जाता है। जैसे हम अतीत की बातों को देख सकते हैं वैसे ही परमेश्वर अपने पूर्व ज्ञान से भविष्य में होने वाली बातों को जान सकता है। सर्वज्ञ होने के कारण, वह भविष्य को देख सकता है; परन्तु उसके इस तरह देखने का अर्थ यह नहीं कि भविष्य में होने वाली घटनाएं घट चुकी हैं।

स्वतन्त्र नैतिक पसन्द और पहले से ठहराए जाने की दोनों धारणाएं नये नियम की एक आयत, प्रेरितों 2:23 में मिलती हैं। उन्हें एक ही वाक्य में इस्तेमाल किया जाता है और उनमें विरोधाभास नहीं होता। पतरस ने कहा था, ''उसी को, जब वह परमेश्वर की ठहराई हुई मनसा और होनहार के ज्ञान के अनुसार पकड़वाया गया, तो तुम ने अधर्मियों के हाथ से उसे क्रूस पर चढ़ाकर मार डाला'' (प्रेरितों 2:23)। परमेश्वर यीशु की मृत्यु के बारे पहले से ही जानता था; उसने तो इसे पहले से ठहराया भी था, परन्तु उसे मारने के लिए उन अधर्मी लोगों को जिम्मेदार ठहराया। मनुष्य की स्वतन्त्र नैतिक पसन्द, और परमेश्वर का पूर्वज्ञान और मंशा एक आयत में पाई जाती है, परन्तु एक धारणा दूसरी को रद्द नहीं करती।

संसार की नींव रखने से पहले परमेश्वर ने मसीह में हमारे उद्धार की योजना बनाई थी या पहले से ठहराया, पर हमारे लिए उद्धार पाने के लिए उद्धार के दायरे अर्थात मसीह की देह में आना आवश्यक है। परमेश्वर के चुने हुओं में आना कोई भी चुन सकता है। किसी ने कहा है, ''जो भी आना चाहता है, वह चुना हुआ है और जो नहीं आना चाहता उसे चुना नहीं गया।''

क्या आप परमेश्वर के चुने हुए लोग हैं? आपको कैसे पता चल सकता है कि आप उसके चुने हुए हैं? पौलुस के अनुसार, इसका उत्तर बहुत ही आसान है कि क्या आप उसमें हैं? मसीह में आने वाले इस बात से आनन्दित हो सकते हैं कि वे चुने हुए लोगों में हैं। मसीह में हम आशीष की ऐसी जगह पर हैं जिसे परमेश्वर ने युगों पहले पूर्वकाल से ठहराया या चुना था। पृथ्वी पर रहते हुए यदि हम मसीह में विश्वासी रहते हैं, तो अनन्तकाल तक रहने के लिए स्वर्ग हमारा घर होगा।

अनादिकाल से चुने हुए

दूसरा, पौलुस ने कहा कि परमेश्वर के चुने हुए, अर्थात कलीसिया, अनादिकाल से ही चुने गए थे, जिन्हें संसार की नींव रखने से पहले चुना गया था। उसके शब्दों में, ''उसने हमें *जगत की उत्पत्ति से पहले* उसमें चुन लिया ...'' (इफिसियों 1:4)।

पौलुस ने बहुत ही बुनियादी यूनानी शब्द का इस्तेमाल किया है जिसे अंग्रेज़ी के NASB संस्करण में ''foundation'' के रूप में अनुवादित किया गया है। वास्तव में इसका अर्थ ''उत्पत्ति की उत्पत्ति से पहले'' है। परमेश्वर ने हमारे पाप करने से पहले, हमें बनाने से पहले, और संसार को रचने से पहले आरम्भहीन अनादिकाल में हमारे विषय में विचार किया और हमें अपने विशेष लोग बनाने के लिए निकाला। अपनी पवित्र और अंतहीन समझ से उसने हमें उद्धार की अपनी योजना जो यीशु में, क्रूस पर उसकी मृत्यु पर, और मसीह की आत्मिक देह अर्थात कलीसिया में केन्द्रित थी, अपने चुने हुए लोग बनाना चुना। इस अर्थ में, यीशु को परमेश्वर का मेमना कहा जा सकता है जो जगत की नींव रखने से पहले घात हुआ था (प्रकाशितवाक्य 13:8; 1 पतरस 1:19, 20)।

परमेश्वर ने यिर्मयाह को बताया था कि, ''गर्भ में रचने से पहले ही मैं ने तुझ पर चित लगाया और उत्पन्न होने से पहले मैं ने तुझे अभिषेक किया; मैं ने तुझे जातियों जातियों का भविष्यवक्ता ठहराया'' (यिर्मयाह 1:5)। पौलुस ने कहा कि परमेश्वर ने उसे मां की कोख से ही अलग कर लिया था (गलतियों 1:15)। परमेश्वर ने यिर्मयाह या पौलुस की अपनी नैतिक पसन्द से नहीं चुना, परन्तु उनके जन्म से पहले ही उसका मन उन पर था। परमेश्वर अपनी सृष्टि की स्वतन्त्र पसन्द के साथ हस्तक्षेप किए बिना ही युक्ति निकाल सकता है, योजना बना सकता है, और पहले से ठहरा सकता है। हो सकता है कि हमें *समझ* न आए, पर परमेश्वर के वचन की स्पष्ट शिक्षा के कारण हम *इस पर स्थिर* रह सकते हैं।

यदि आप जानना चाहते हैं कि परमेश्वर के लिए कलीसिया कितनी महत्वपूर्ण है, तो संसार की सृष्टि से पहले लोगों को उसके चुने हुए लोग बनाने के लिए कलीसिया को उसके चुनने पर विचार कीजिए। परमेश्वर ने यह पसन्द कुछ भी बनाने से पहले बनाई थी। हम आम तौर पर किसी विशेष परिस्थिति में यह कहकर कि ''जिस समय ऐसा हुआ था, तब मुझे लगा था ...'' उस स्थिति के बारे में अपनी प्राथमिकताएं बताते हैं। उस समय अपने विचार से सबसे महत्वपूर्ण बात पर हम अपने विचार को ऐसे ही प्रकट करते हैं। परमेश्वर के वचन के खोजपूर्ण औजार से, हम ऐसे ही देख सकते हैं कि उसके मन में पहले सबसे महत्वपूर्ण बात क्या थी: ''उसने हमें जगत की उत्पत्ति से पहिले उसमें चुन लिया।'' कलीसिया उसके चुने हुए लोगों के रूप में जगत की उत्पत्ति से पहले ही परमेश्वर के मन में थी।

चुने हुए लोग परमेश्वर के लिए कितने प्रिय हैं! वे समय के आरम्भ होने से पहले ही उसके ध्यान में थे। इस सच्चाई से हमें ईश्वरीय उत्साह के साथ बल और सामर्थ मिलता है।

पवित्र होने के लिए चुने हुए

तीसरा, पौलुस कहता है कि हमें पवित्र बनने के लिए चुना गया है। वह लिखता है, ''उसने हमें जगत की उत्पत्ति से पहले उसमें चुन लिया *कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों''* (इफिसियों 1:4)। हमें एक उद्देश्य के लिए चुना गया है।

परमेश्वर ने कलीसिया को अपने लोग बनाने और अपना चरित्र या स्वरूप प्रकट करने के लिए चुना है। उसने ठहराया है कि उसकी कलीसिया पवित्र बने। पतरस ने कहा है, ''पर जैसा तुम्हारा बुलाने वाला पवित्र है, वैसे ही तुम भी अपने सारे चालचलन में पवित्र बनो। क्योंकि लिखा है, कि पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूं'' (1 पतरस 1:15, 16)। पवित्र बनने का अर्थ है पाप से शुद्ध और परमेश्वर के पवित्र काम के लिए अलग होना।

परमेश्वर ने अपने लोगों को निष्कलंक बनने के लिए भी चुना है। इस शब्द का अर्थ है ''दाग रहित'' या ''दोष रहित।'' इससे परमेश्वर के लोगों के लक्ष्य का पता चलता है। हमें उसके सामने निर्दोष जीवन जीने की कोशिश करनी है। इस उच्च अभिलाषा को यदि हम प्राप्त न भी कर पाएं, तो भी हमारे मनों को इसी पर लगे रहना चाहिए। पवित्र बनने और दोषरहित होने की कोशिश तब तक समाप्त नहीं होगी जब तक हम अनन्तकाल में उसके सिंहासन के सामने खड़े नहीं होते। मसीही लोग, अपने प्रभु के प्रिय निर्देशों के कारण परमेश्वर के सामने ऐसा जीवन बिताने की इच्छा करते हैं जिससे वे अपने विरुद्ध आरोप से बच जाते हैं।

पौलुस ने यह भी कहा है कि परमेश्वर ने ''हमें अपने लिए पहिले से ठहराया, कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र हों'' (इफिसियों 1:5)। उसने हमें अपने पुत्र बनाने के लिए चुना है। इस संदर्भ में लेपालक होने का अर्थ ''पुत्र होने के समस्त अधिकारों, विशेषाधिकारों तथा कर्तव्यों को पाना है।'' लेपालक अर्थात गोद लेने से, हमें परमेश्वर के परिवार में पुत्र होने के सभी अधिकार प्राप्त होते हैं। परमेश्वर ने पहले से ठहराया, अर्थात आरम्भरहित अनादिकाल में यह निर्णय लिया कि वह यीशु में आने वालों को गोद लेगा और उन्हें अपने स्वर्गीय परिवार के समस्त अधिकार, धन और ज़िम्मेदारियां देकर अपनी संतान बनाएगा।

मान लीजिए कि रेडियो स्टेशन वाले आपको बुलाकर कहते हैं, ''आप चुन लिए गए हैं। हमने आपका चयन कर लिया है।'' आप तुरन्त कहेंगे, ''किस बात के लिए चुन लिया?'' मान लीजिए कि आपको बुलाने वाला कहता है, ''हमने आपको चुन लिया है, पर पता नहीं किस बात के लिए। आपको चुनते समय हमारे मन में कोई विशेष बात नहीं थी। इस समय हम आपको केवल इतना ही बता सकते हैं कि आपका चयन हो गया है। टोकरी में हज़ारों लोगों के नाम थे और जब ड्रॉ निकला, तो आपका नाम आ गया। अत: हमने आपको बधाई देने के लिए बुलाया है।'' यह सुनकर कि ''पता नहीं किस बात के लिए आपका चयन है'' चुने जाने की आपकी सारी खुशी एकदम खत्म हो जाएगी। आप अपने आपको चुना हुआ या विशेष महसूस नहीं करेंगे। चुने जाने का रोमांच उसके अर्थ को समझने में जाता रहेगा।

परमेश्वर ने अपने चयन का एक उद्देश्य रखा है। परमेश्वर ने हमें मसीह में उसके उद्धार को पाने, उसके पुत्रों के रूप में गोद लिए जाने और इस संसार में उसके अपने लोगों के रूप में पवित्र और निष्कलंक जीवन बिताने के लिए चुना है। उसने हमें एक पवित्र उद्देश्य से अपने बुलाए हुए लोगों के रूप में अलग होकर जीवन बिताने के लिए चुना है।

पवित्रता तथा निष्कलंकता को परमेश्वर के वचन के प्रति वचनबद्ध रहकर बनाए रखा जाता है। हमें परमेश्वर की इच्छा मानने पर अलग किया गया अर्थात पवित्र होने के लिए बुलाया गया है, और उसकी इच्छा में बने रहने से हम उसके सामने निष्कलंक बनते हैं। आइए अपने भाई पतरस की बातों पर ध्यान लगाएं:

> इस कारण हे भाइयो, अपने बुलाए जाने, और चुन लिए जाने को सिद्ध करने का भली भांति यत्न करते जाओ, क्योंकि यदि ऐसा करोगे, तो कभी भी ठोकर न खाओगे। वरन इस रीति से तुम हमारे प्रभु और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह के अनन्त राज्य में बड़े आदर के साथ प्रवेश करने पाओगे (2 पतरस 1:10, 11)।

अनुग्रह से चुने गए

चौथा, हमें अनुग्रह के कारण चुना गया है। पौलुस कहता है कि परमेश्वर ने हमें ''*अपनी इच्छा की सुमति के अनुसार*'' चुना ''कि उसके उस अनुग्रह की महिमा की स्तुति हो, जिसे उस ने हमें उस प्यारे में सेंत मेंत दिया'' (1 इफिसियों 1:5-6)। अन्य शब्दों में, यह चुना जाना परमेश्वर की भलाई तथा करुणा के कारण आरम्भ होकर पूर्ण हुआ।

उसकी ''इच्छा की सुमति'' का क्या अर्थ है? परमेश्वर की इच्छा में आज्ञाएं, निर्देश और विधियां सम्मिलित हैं। पूरे उद्देश्य तथा विषयों में, उसकी सम्पूर्ण इच्छा में एक मूल अभिप्राय, एक परम उद्देश्य और एक अनुग्रहकारी नमूना है। मूल सुमति अर्थात अभिप्राय का क्या अर्थ है? क्या इसका अर्थ पाप से उद्धार तथा उसके साथ जीवन नहीं है? अन्य शब्दों में, वह हमारा भला चाहता है। परमेश्वर ने जो कुछ भी किया है वह सचमुच में हमारा भला देखकर परोपकार से किया है। पतरस ने कहा था, ''प्रभु ... तुम्हारे विषय में धीरज धरता है, और नहीं चाहता, कि कोई नाश हो; वरन यह कि सबको मन फिराने का अवसर मिले'' (2 पतरस 3:9)। पौलुस ने लिखा है, ''यह हमारे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर को अच्छा लगता, और भाता भी है। वह यह चाहता है, कि सब मनुष्यों का उद्धार हो; और वे सत्य को भली भांति पहचान लें'' (1 तीमुथियुस 2:3, 4)।

परमेश्वर के चुने हुए लोगों के रूप में, कलीसिया का अस्तित्व, ''उसके उस अनुग्रह की महिमा की स्तुति करने के लिए है, जिसे उस ने हमें उस प्यारे में सेंत मेंत दिया'' (1 इफिसियों 1:6)। परमेश्वर ने कलीसिया की योजना बनाई, कलीसिया के आने की भविष्यवाणी की, कलीसिया की नींव रखने के लिए यीशु को भेजा, कलीसिया को खरीदने के लिए क्रूस पर मरने के लिए मसीह को भेजा, आश्चर्यकर्म से पिन्तेकुस्त के दिन कलीसिया का आरम्भ किया और संसार के उद्धार के लिए सुसमाचार के प्रचार में अगुआई दी, पर यह

सब संसार के उद्धार के लिए उसकी करुणामय सुमति को पूरा करने के लिए किया गया था। उसके ईश्वरीय कार्य के फल अर्थात कलीसिया के लिए उसके अनुग्रह के तेज की महिमा करना आवश्यक है। कलीसिया शून्य से आरम्भ होकर विश्वव्यापी संगठन बनने की डींग नहीं मार सकती है। यह परमेश्वर की अनुग्रहकारी सुमति और कार्यों में केवल उसकी महिमा ही कर सकती है। उसका अनुग्रह हमारी महिमा है।

क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं जिसने सदैव हमारा भला ही चाहा है ? क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं जिसका व्यवहार, ''पहले मैं'' के बजाय हमेशा ''पहले आप'' वाला रहा हो ? क्या कोई ऐसा है जो आपको हर बात में प्राथमिकता देता हो ? यदि आपने सबसे नि:स्वार्थ और उदार व्यक्ति का जिसे आप जानते हों, चित्र बनाना हो और उस चित्र को लाखों बार गुणा करना हो, तो आपको एक ही चित्र दिखाई देगा और वह चित्र परमेश्वर का होगा। वह जो भी करता है, अपनी दया के कारण ही करता है।

उसके अनुग्रह के लिए धन्यवाद देने के साथ, हमें उस उद्धार के लिए जो मसीह में मिला है, उस मिशन या उद्देश्य के लिए जो हमें दिया गया है और उज्ज्वल भविष्य के लिए जो न खत्म होने वाले अनन्तकालिक भविष्य में परमेश्वर के चुने हुओं के रूप में हमें मिला है, आनन्द करना चाहिए। प्रत्येक मसीही को मन से परमेश्वर के उस अद्वितीय अनुग्रह के गीत गाते रहना चाहिए। परमेश्वर के अति बहुतायत वाले अनुग्रह के कारण धन्यवाद, स्तुति, विश्वास और आज्ञाकारिता उत्पन्न होनी चाहिए।

सारांश

सचमुच, पौलुस की लेखनी के माध्यम से पवित्र आत्मा ने हमें सिखाया है कि कलीसिया परमेश्वर की चुनी हुई है। उसने हमें बताया है कि परमेश्वर ने हमें उसमें अनादिकाल से पवित्र बनने के लिए और अपने अनुग्रह के कारण चुना। हम उसकी आंखों के तारे हैं। संसार की सृष्टि की योजना बनाते समय उसने पहले हमारे विषय में विचार किया था, और आज भी वह हमें प्राथमिकता देता है।

कोई भी जो मसीह से बाहर अर्थात चुने हुए लोगों के दायरे से बाहर है, उसे बिना देरी किए उसकी देह में प्रवेश करना चुन लेना चाहिए। जब मैं हाई स्कूल में पढ़ता था, तो हाई स्कूल की वार्षिक पुस्तक में ''कौन क्या है'' में कुछ चुने हुए छात्रों के ही नाम छपते थे। केवल कुछ छात्रों को ही चुना जाता था और यह चयन उन छात्रों की प्रसिद्धि, उत्कृष्ट योग्यताओं, और रिकॉर्ड को देखकर किया जाता था। परमेश्वर के ''कौन क्या है'' की पुस्तक कलीसिया है। उसके ''कौन क्या है'' में होना हम अपनी पसन्द से चुनते हैं, न कि परमेश्वर हमारी पसन्द बनाता है। वह हमें प्रसिद्धि, योग्यताओं और रिकॉर्ड को देखकर नहीं बल्कि हमारे विश्वास और मसीह की आज्ञा मानने पर चुने हुओं के इस समूह में रखता है। अपने उस प्रिय अर्थात यीशु मसीह में अपने अनुग्रह से, परमेश्वर उन सबको जो चुने हुए नहीं हैं, मसीह की देह में प्रवेश करने और चुने हुए लोग बनने, अर्थात उद्धार, भरपूरी के जीवन और स्वर्ग में अनन्त जीवन पाने का निमन्त्रण देता है।

चुने हुए लोगों में शामिल होने के लिए चुने जाइए। चुने हुए लोगों से एक होना चुन लें। परमेश्वर के पहले से ठहराए हुए संतान बनने का फैसला कर लें।

अध्ययन एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. क्या आप मसीह की देह के सभी सदस्यों को परमेश्वर के चुने हुए कहते हैं ?
2. इफिसियों 1:4-6 में पौलुस के अनुसार मसीह में पाई जाने वाली आत्मिक आशिषें क्या हैं ?
3. एक समूह के पहले से ठहराए होने और एक व्यक्ति के पहले से ठहराए होने में क्या अन्तर है ?
4. ''Predestination'' शब्द अर्थात पहले से ठहराए होने का क्या अर्थ है ?
5. Foreknowledge अर्थात ''पूर्व ज्ञान'' और Predestination अर्थात ''पहले से ठहराया हुआ'' शब्दों में क्या अन्तर है ?
6. हमें कैसे पता चल सकता है कि हम परमेश्वर के चुने हुए लोग हैं ?
7. परमेश्वर ने हमें मसीह में कब चुना ?
8. परमेश्वर ने हमें क्या करने या क्या बनने के लिए चुना है ?
9. ''पवित्र बनने'' शब्द का अर्थ बताएं।
10. ''अनुग्रह से चुने हुए'' वाक्यांश का क्या अर्थ है ?
11. ''परमेश्वर के चुने हुए'' वाक्यांश आपको कैसे उत्साहित करता है ?
12. हम परमेश्वर के चुने हुए लोग कैसे बनते हैं ?